हमारे प्रभु का नाम सदैव धन्य रहे। मैं आपको परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिए स्वागत करता हूँ। आज हम संक्षेप में अपने प्रभु यीशु के जीवन के एक हिस्से पर नज़र डालेंगे—कि वह पृथ्वी पर कैसे था। जैसा कि हम जानते हैं, उसका जीवन स्वयं मसीह की कलीसिया के लिए एक पूर्ण प्रकाशन है कि उसे कैसा होना चाहिए।

जब हम पवित्रशास्त्र पढ़ते हैं, तो देखते हैं कि प्रभु यीशु की भविष्यवाणी इस प्रकार की गई थी कि वह दाऊद के वंश से आएगा और दाऊद के नगर बेतलेहम से प्रकट होगा (माइका 5:1; मत्ती 2:6)। और जैसा कि हम जानते हैं, यह सब ठीक उसी प्रकार पूरा हुआ: वह यहूदा के बेतलेहम में जन्मा। लेकिन यीशु ने दाऊद के नगर बेतलेहम में या दाऊद के वंशजों के बीच निवास नहीं किया। इसके बजाय वह गलील में एक छोटे से नगर नाज़रेथ में जाकर बस गया, जो बेतलेहम से बहुत दूर था।

यह नगर इस्राएल के उत्तर में था और उस समय इस्राएल के सभी नगरों में सबसे कम महत्व का था—एक ऐसा स्थान जिसके बारे में पवित्रशास्त्र में कोई सीधी भविष्यवाणी नहीं मिली थी, यद्यपि परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पहले ही संकेत दे चुका था (मत्ती 2:23)। यह एक छोटा, साधारण, भुला हुआ सा नगर था—जहाँ से किसी महान व्यक्ति के उठ खड़े होने की कोई अपेक्षा

नहीं की जाती थी।

इसी कारण जब फिलिप्पुस ने नतनएल को मसीह के बारे में बताया, तो उसने कहा:

यूहन्ना 1:46:
“क्या नाज़रेथ से कोई उत्तम वस्तु निकल सकती है?”
फिलिप्पुस ने उससे कहा, “आकर देख।”

फिर भी वही स्थान था जिसे परमेश्वर ने चुना कि संसार का उद्धारकर्त्ता वहाँ लगभग 30 वर्ष तक रहे। प्रभु यीशु का लगभग 90% सांसारिक जीवन इसी भूले हुए नगर में बीता। इसलिए लोग हर जगह उसे नाज़रेथ का यीशु कहते थे (मत्ती 26:11)। न केवल लोग और प्रेरित ही ऐसा कहते थे—पिलातुस ने भी उसे इसी नाम से पुकारा, और दुष्टात्माएँ भी उसे इसी नाम से पहचानती थीं।

मरकुस 1:23–24:
“और तुरंत उनकी आराधनालय में एक मनुष्य था जिसमें अशुद्ध आत्मा थी; वह चिल्लाकर बोला:
‘हे नाज़रेथ के यीशु, हमें तुझसे क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है?’”

यहाँ तक कि स्वयं प्रभु ने भी यही नाम प्रयोग किया जब वह

दामिश्क के मार्ग पर शाऊल के सामने प्रकट हुआ:

प्रेरितों के काम 22:6–8:
“जब मैं दामिश्क के निकट पहुँचा, तो दोपहर के समय अचानक आकाश से एक बड़ा प्रकाश मेरे चारों ओर चमका।
मैं भूमि पर गिर पड़ा और मैंने एक आवाज़ सुनी: ‘शाऊल, शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?’
मैंने कहा, ‘हे प्रभु, तू कौन है?’ उसने कहा, ‘मैं नाज़रेथ का यीशु हूँ, जिसे तू सताता है।’”

शायद हम भी प्रभु यीशु को इस नाम से पहचानते हैं, पर यह नहीं जानते कि हम उसे नाज़रेथ का यीशु क्यों कहते हैं। हमें समझना चाहिए कि क्यों नाज़रेथ, और क्यों नहीं बेतलेहम, कोरज़ीन या कफ़रनहूम।

परमेश्वर चाहता है कि हम यह समझें कि हमारी परिस्थितियाँ उसकी प्रतिज्ञाओं को पूरा होने से नहीं रोक सकतीं।
कुछ लोग कहते हैं, “क्योंकि मैं गाँव में हूँ—काश मैं शहर में होता, तो मैं परमेश्वर के लिए यह या वह कर सकता।” नहीं भाई, नहीं बहन—यीशु को याद करो—नाज़रेथ के यीशु को, न कि बेतलेहम के यीशु को। इससे सीख लो!

शायद तुम कहो, “क्योंकि मैं अफ्रीका में जन्मा हूँ—काश मैं

यूरोप में जन्मा होता, तो मैं परमेश्वर के लिए बड़े काम कर सकता।” नहीं—नाज़रेथ के यीशु को स्मरण करो।

हमें कोई बहाना नहीं बनाना चाहिए। हमारा प्रभु चरनी में जन्मा, पवित्रशास्त्र कहता है कि वह निर्धन था। वह एक ऐसे नगर में रहा जहाँ कोई विशेषता, कोई प्रसिद्धि, कोई विकास नहीं था। फिर भी उसी से सारी दुनिया ने जाना कि वही उद्धारकर्त्ता है—वही जिसकी भविष्यद्वक्ताओं ने घोषणा की थी।

इस प्रकार हम भी—चाहे कैसी भी परिस्थितियों में हों—अच्छी या बुरी, आधुनिक या सरल—परमेश्वर की इच्छा को पूर्णतया पूरा कर सकते हैं, यदि हम विश्वासयोग्य हों, जैसे हमारा उद्धारकर्त्ता अपने पिता के प्रति विश्वासयोग्य था।

प्रभु आपको आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp